पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

विषय :

मंत्र योग का वैज्ञानिक विवेचन

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा
विक्रम संवत्सर २०५८-५६

शोध छात्र
अमृत लाल गुर्वेन्द्र
सहायक
योग विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
हरिद्वार

निर्देशक
डॉ. प्रणव पण्ड्या
निदेशक
ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
एवं कुलाधिपति
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
हरिद्वार

बाह्य निर्देशक
डॉ. ईश्वर भारद्वाज
अध्यक्ष
योग विभाग
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

योग विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुंज-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तरांचल)
2003

मंत्र योग का वैज्ञानिक विवेचन

मन्त्र विद्या भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ विद्या है जिसपर भारतवर्ष को हमेशा से गर्व रहा है। 'मनन करने से जो त्राण करे उसे मन्त्र कहते हैं।'[1] मन्त्र विद्या का विस्तार असीम है। उसमें अनेकानेक शब्द गुच्छक है। अनेक शब्दों से मन्त्रों का विस्तार हुआ है। यही शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म की धुरी है। शब्द ब्रह्म यदि मन्त्र विज्ञान की पृष्ठभूमि बनाता है तो नाद ब्रह्म की साधना नाद योग का आधार बनाती है। ओंकार के विराट ब्रह्माण्ड में गुंजन से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, यदि यह कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। नाद या शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति व ताप, प्रकाश आदि-शक्तियों का आविर्भाव उसके बाद होता चला गया। इस प्रकार सृष्टि का मूल इस निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त ब्राह्मी चेतना की धुरी यदि कोई है तो वह शब्द का नाद ही है। इस तरह "मन्त्रों के रूप में परमेश्वर ही प्रस्फुटित होता है।"[2] शास्त्रों में कहा है- "शब्द ब्रह्म में निष्णात होने पर परब्रह्म की उपलब्धि होती है। शब्दातीत परमपद का साक्षात्कार करना हो तो शब्द का आश्रय लेकर ही शब्दराज का भेद करना होता है। समग्र विश्व शब्द से उद्भूत एवं शब्द में ही विधृत है। "वागेव विश्व भुवनानिजज्ञे, वाच इत् सर्वभूतं यच्च मर्त्यम्" (जपसूत्रम भाग-1, भूमिका) अर्थात शब्द ही जगत-सृष्टि का मूल है। सृष्टि के बाहर जाना हो तो शब्द ही एकमात्र आलम्बन है। इसीलिए मन्त्रविद्या में शब्द को पकड़कर ही शब्दातीत परब्रह्म पद में जाने का उपदेश है।

---

1. मननात् त्राणधर्माऽसौ मन्त्रोऽयं परिकीर्तितः।। (संङ्केत पद्यति)
2. स्वच्छन्दोद्योत।। पटल पृ0 15.

अक्षर ब्रह्म का भेद होते ही परब्रह्म का द्वार खुल जाता है। परब्रह्म शब्दातीत है। "मनन और त्राण मन्त्र के ये दो धर्म हैं"[1] पर नाद का परामर्श ही मनन है। अपूर्णता के प्रशमन को, रक्षा अथवा त्राण कहते हैं। इस प्रकार "शक्ति के वैभव या विकास की दिशा में मनन युक्त तथा सांसारिक अवस्था में त्राणमयी विश्व रूप विकल्प को कवलित कर लेने वाली अनुभूति ही मन्त्र है।"[2] "शिव शक्ति और आत्मा के समुचित रूप को ही मन्त्र की संज्ञा दी जाती है।"[3] *पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार* "मन्त्र वह है जिसमें मानसिक एकाग्रता एवं निष्ठा का समुचित समावेश हों, परिष्कृत व्यक्तितत्व की परिमार्जित वाणी से जिसकी साधना की जाय। जिसकी रहस्यमय क्षमता पर गहन श्रद्धा हो तथा जिसका अनावश्यक विज्ञापन न करके गोपनीय रखा जाय।"[4]

अध्यात्म शब्द विद्या को तत्वज्ञानियों ने 'वाक्' कहा है। यह 'वाक्' अत्यधिक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण है। इसकी विवेचना करते हुए शास्त्रकारों ने कहा है - "जिस प्रकार समुद्र में तरंगे उठती हैं उसी प्रकार वाक् की तरंगें भी कम्पन्न के सहित गति करती हैं।"[5] प्रजापति अकेले थे, उनके अतिरिक्त वाक् ही उनकी अपनी सम्पत्ति थी। उन्होंने इच्छा की कि मैं इस वाक् का सर्जन करूँ। यह वाक् ही

---

1. मननत्राण धर्माणोमन्त्रः। महार्थमञ्जरी, पृ0 102.
2. मननमयी निजविभवे निज संकोचमर्य प्राणमयी।
   कवलित विश्वविकल्पा अनुभूतिः कापि मन्त्रशब्दार्थ ।।48।।
   (महाधर्मञ्जरी संस्कृतछाया)
3. जानवुडरफ - गारलैण्ड ऑफ लेटर्स, पृ0 145.
4. आचार्य श्रीराम शर्मा - मन्त्र शक्ति के चमत्कारी परिणाम, अखण्ड ज्योति वर्ष 41 अंक 4 (पृ. 28)
5. प्रावीविपद्वाच उर्मि न सिन्धुः। ऋग् 9/96/7

सब कुछ हो जाएगा।[1] ब्रह्म के पश्चात् जो कुछ है सो वाक् ही है।[2] वाक् ही स्पष्ट देवता है।[3] यह वाक् ही विश्वकर्मा ऋषि है। इसी से यह सारा संसार रचा गया है।[4] जो उस आदिमूल वाक् को जानता है वह सम्पत्तिविद् सिद्ध पुरूष कहलाता है।[5] मन्त्र विद्या की महान सामर्थ्य को यदि ठीक तरह से समझा जा सके और उसका समुचित प्रयोग किया जा सके तो ये आध्यात्मिक प्रयास किसी भी भौतिक उन्नति के प्रयास से कम महत्वपूर्ण और कम लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता।

मन्त्र विद्या साधना का एक ऐसा शब्द विज्ञान है कि उसका उच्चारण करते ही किंसी चमत्कारी शक्ति का बोध होता है। ऐसी धारणा है कि प्राचीन काल के योगी, ऋषि और तत्वदर्शी महापुरूषों ने मंत्रबल से पृथ्वी, देवलोक और ब्रह्माण्ड की अनन्त शक्तियों पर विजय पाई थी। मन्त्र शक्ति के प्रभाव से वे इतने समर्थ बन गये थे कि इच्छानुसार किसी भी पदार्थ का हस्तान्तरण कर शक्ति को पदार्थ और पदार्थ को शक्ति में बदल देते थे। श्राप और वरदान मन्त्र के ही प्रभाव माने जाते थे। एक क्षण में किसी का रोग अच्छा कर देना, एक पल में करोड़ों मील दूर की बात जान लेना, एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र की जानकारी और शरीर की 72 हजार नाड़ियों के एक-एक जोड़ की जानकारी तक मन्त्र की ही अलौकिक शक्ति द्वारा ही सम्भव होती थी। इसलिए भारतीय तत्वदर्शन में मन्त्रशक्ति पर जितने शोध

---

1. प्रजापतिर्वा इदमेक आधीतस्य वामेव स्तमासीत् वाग द्वितीया स एक्षते मामेव वाच विसृजा। इयं वा इद सर्व विभवव्येदयतीति। (ताण्डय ब्रा. 20/14/2)
2. तद्‌यत किञ्चार्वाचीनं ब्रह्मणस्तद् वागेव सर्वम् (जे.उ. 1/13/1/3)
3. वाग् वै त्वष्टा। (ऐत 2/4)
4. वाक् वैविश्वकर्मर्णि वाचाहीद सर्व कृतम्। (शतपथ 8/1/2/9)
5. यो वै तां वाचं वेद यरूमा एव विकारः स सम्प्रति विदकारी वै सर्वा वाक्। (ऐ.ब्रा. 2/3/6)

हुए हैं, इतने किसी पर भी नहीं हुए हैं। मन्त्रों के आविष्कारक होने के कारण ही ऋषि मन्त्र दृष्टा कहलाते थे। वेद और कुछ नहीं एक प्रकार के मन्त्र विज्ञान के ग्रंथ हैं। जिनमें विराट ब्रह्माण्ड की उन अलौकिक, सूक्ष्म और चेतन सत्ताओं और शक्तियों तक से संबंध स्थापित करने के गूढ़ रहस्य दिये हुए हैं जिनके संबंध में विज्ञान अभी क, ख, ग भी नहीं जानता।

मन्त्र विद्या ध्वनि तरंगों पर आधारित है। रेडियो, टेलीविजन, राडार की भांति प्राचीन काल के आविष्कारों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा चमत्कारी खोज थी। मन्त्र, ध्वनि विज्ञान का सूक्ष्मतम विज्ञान है। इसके अनुसार जो कार्य आधुनिक यन्त्रों के माध्यम से हो सकते हैं वे मन्त्र के प्रयोग से भी संभव हैं। पदार्थ की तरह अक्षरों तथा अक्षरों से युक्त शब्दों में अकूत शक्ति का भंडार मौजूद है। मन्त्र कुछ शब्दों के गुच्छक मात्र होते हैं पर ध्वनि शास्त्र के आधार पर उनकी संरचना बताती है कि एक विशिष्ट ताल क्रम एवं गति से उनके उच्चारण से विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होती है। प्राचीन काल में ऋषियों ने,,शब्दों की गहराई में जाकर उनकी कारण-शक्ति की खोजबीन के आधार पर मन्त्रों एवं छन्दों की रचना की थी। पिछले दिनों ध्वनि विज्ञान पर अमेरिका, प. जर्मनी में कितनी ही महत्वपूर्ण खोजें हुई हैं। साऊण्ड थेरेपी एक नयी उपचार पद्धति के रूप में विकसित हुई है। ध्वनि कम्पनों के आधार पर मारक शस्त्र भी बनने लगे हैं। ब्रेन वाशिंग के अनगिनत प्रयोगों में ध्वनि विद्या का प्रयोग होने लगा है।[1] ध्वनि द्वारा वृक्ष वनस्पतियों की, फसलों की वृद्धि में तथा जीवजगत के अनुदान प्राप्त करने के निमित्त प्रयोग

---

1. शब्द ब्रह्मनाद ब्रह्म, वाङमय 19. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पृ० 12.

सम्पन्न हो रहे हैं।[1] अन्तरिक्ष की यात्रा करने वाले राकेटों, स्पेश शटलों के नियन्त्रण, संचालन में भी शब्द विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है पर वैज्ञानिक क्षेत्र में ध्वनि विद्या का अब तक जितना प्रयोग हुआ है वह स्थूल है। सूक्ष्म और कारण स्वरूप अभी भी इसके लिए अविज्ञात है जो स्थूल की तुलना में कई गुना अधिक सामर्थ्यवान है। मन्त्रों में शब्दों की स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म एवं कारण शक्ति का अधिक महत्व है। मानवी व्यक्तित्व की गहरी परतों मन एवं अन्त:करण को मन्त्र की सूक्ष्म एवं कारण शक्ति ही प्रभावित करती है। यदि ध्वनि की सृजनात्मक सामर्थ्य का उपयोग किया जा सके तो शब्द शक्ति की प्रभावोत्पादकता से बहुत कुछ कार्य स्थूल व सूक्ष्म दोनों ही जगत में सम्पन्न हो सकता है।[2]

परकाया प्रवेश जल तथा अग्नि का स्तम्भन, जल के भीतर अबाध गति, आकाश गमन, ब्रह्माण्ड के विभिन्न लोकों की यात्रा करने की क्षमता, अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य इशित्व तथा कामावसायित्व आदि अष्ठ सिद्धियां, मारन, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, शांति आदि षट्कर्म, शत्रुओं पर विजय, अस्त्र शस्त्रों को प्रभावी या निष्प्रभावी बनाना इत्यादि अनेक अलौकिक प्रतीत होने वाले कार्य इस मन्त्र शास्त्र द्वारा ही सम्भव होते थे। आज भी यदि साधना द्वारा इस शास्त्र को सिद्ध कर लिया जाये तो कुछ भी असम्भव नहीं है, परन्तु अब न तो किसी में इतना धैर्य है और न इस शास्त्र की विधियां ही कहीं एकत्र सुलभ हैं। 'मन्त्रमहोदधि:' (नौका टीकायुक्त), 'मन्त्र रहस्य' के प्रकाशन से इस कमी को बहुत अंशों तक दूर किया

---

2. वही, पृ0 6-15.
3. वही पृ0 1-2.

गया है किन्तु संग्रहित मन्त्रों का क्षेत्र अपेक्षाकृत विस्तृत होने के साथ ही उसमें विज्ञान-सम्मत तथ्य की आवश्यकता सदा से ही अनुभव की जाती रही है। ऐसे समय में मन्त्र योग की वैज्ञानिकता को उजागर कर उनमें छिपी अकूत शक्ति से जन सामान्य को परिचित कराना वर्तमान समय की महती आवश्यकता है।

इस पृष्ठभूमि में 'मन्त्र योग का वैज्ञानिक विवेचन' विषय का पी-एच.डी. हेतु चयन न केवल उपयुक्त है बल्कि समीचीन भी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य मन्त्र विद्या को आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर कस कर आज के वैज्ञानिक युग में इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सिद्ध करने तथा इसके प्रति आस्था को पुनः प्रतिष्ठित करना है। इसमें मन्त्र विद्या के ऐसे विधि विधानों का वर्णन भी किया जायेगा, जिससे अल्पज्ञ भी सरलता से अनुष्ठान करते हुए अपने इष्टमन्त्रों को सिद्ध कर सकें।

इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखकर इस विषय पर चुने गये अध्याय इस प्रकार हैं - 1) भूमिका, 2) मन्त्र योग के स्रोत, 3) मातृका रहस्य, 4) मन्त्र रहस्य, 5) मन्त्र योग का आध्यात्मिक विवेचन, 6) मन्त्र योग का वैज्ञानिक विवेचन, 7) मन्त्र योग साधना का विज्ञान विधान, 8) उपसंहार।

योजना के अनुसार हर अध्याय की विषय वस्तु अगले से सम्बद्ध है। ***प्रथम अध्याय : भूमिका*** में मन्त्र योग और उसकी वैज्ञानिकता के सामयिक महत्व का विशद विवेचन किया जायेगा। प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में मन्त्र विद्या को सूत्र रूप में पिरोए हुए है। वैदिक परम्परा

के ऋषिगण एवं विचारक इसके ज्ञाता एवं अन्वेषणकर्ता थे। वे मन्त्र विद्या की वैज्ञानिकता के गूढ़ रहस्यों को जानते थे। ***द्वितीय अध्याय : मन्त्र योग के स्रोत*** की विषय वस्तु के अन्तर्गत मन्त्र विद्या के आधारभूत ग्रन्थ, मन्त्र विद्या के प्रमुख आचार्यों एवं मन्त्र विद्या के समप्रत्यय तथा वैज्ञानिक दृष्टि पर अध्ययन किया जायेगा। ***तृतीय अध्याय : मातृका रहस्य*** में मातृका के स्वरूप अर्थात् मातृका क्या है? इनका उद्भव कैसा और कहाँ से हुआ, मातृका वर्ण क्या है? वर्ण का विकास किस प्रकार होता है। इन गूढ़ रहस्यों का वैज्ञानिक विवेचन किया जायेगा।

अध्याय चतुर्थ : मन्त्र रहस्य - "मन्त्र विद्या" अनेक रहस्यों की खान है। इस अध्याय में मन्त्र के स्वरूप महिमा, उनका वर्गीकरण तथा प्रत्येक मन्त्र के अलग-अलग देवता, ऋषि, छन्द होते हैं उसका विस्तृत विवेचन किया जायेगा। साथ ही मन्त्रों को संस्कारित करने के विज्ञान विधान पर प्रकाश डाला जायेगा।

अध्याय पंचम : मन्त्र योग का आध्यात्मिक विवेचन - मंत्र विद्या का यथार्थ रहस्योद्घाटन मन्त्र दीक्षा के साथ आरम्भ होता है। अत: इस अध्याय में सर्वप्रथम मंत्र विद्या की आध्यात्मिक दीक्षा पर प्रकाश डाला जाएगा। इसी के साथ मन्त्र साधक कैसा हो, उनका खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार इत्यादि बातों का विवेचन किया जायेगा। साथ ही मन्त्रों को किस प्रकार, किस समय और कितना करें तथा इससे आध्यात्मिक तत्वों एवं शक्तियों का विकास किस प्रकार होता है, इस पर विस्तृत विवेचन किया जायेगा।

अध्याय षष्ठ : मन्त्र योग का वैज्ञानिक विवेचन - 'शब्द' को ब्रह्म कहा गया है। शब्द (ध्वनि) के आदि स्वरूप को अनहद या अनाहत नाद के रूप में जाना जाता है। इस अध्याय में शब्द शक्ति के विज्ञान के साथ ही यौगिक क्रियायें जैसे- बंध, मुद्रा व चक्र की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही माला तथा मन्त्र पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया जायेगा।

अध्याय सप्तम : मन्त्र योग साधना का विज्ञान विधान - मन्त्र साधना की सिद्धि में सहायक तत्वों, अनुष्ठान अनुबंधों एवं पुरश्चरण के विज्ञान विधान के बारे में विस्तृत विवेचन किया जायेगा। साथ ही कतिपय विशिष्ट मन्त्रों एवं मन्त्रात्मक स्रोतों के साधना विधान पर प्रकाश डाला जायेगा। (उदा. गायत्री मन्त्र, त्र्यंम्बकं मंत्र, रूद्रमन्त्र)।

अध्याय अष्टम : उपसंहार - प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अष्टम अध्याय उपसंहार है जिसमें मंत्रों के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व का मूल्यांकन सामयिक दृष्टिकोण से किया जायेगा। साथ ही 'मंत्र विद्या' के सार तत्वों का निष्कर्ष रूप में व्याख्या के साथ कुछ सुझाव, निर्देशों का वर्णन किया जायेगा।

इस तरह शोध अध्ययन का उद्देश्य 'मंत्र विद्या' की रहस्यमयी शक्तियों की प्रभावोत्पादकता को आधुनिक विज्ञान की कसौटी में कसकर इनकी प्राचीन मर्यादा की पुनः प्रतिष्ठा और सर्वसाधारण में इसके प्रति आस्था उत्पन्न करना है साथ ही आज जो सर्वत्र यह धारणा बन गई है कि मन्त्र-तन्त्र सब मिथ्या है इसका भी प्रतिकार होगा। प्राचीन काल में यह मान्यता थी कि "शब्द ब्रह्म एक सेतु है

जिसका संबंध सभी वस्तुओं से है।" आज का विज्ञान भी अब यह कहता है कि "प्रत्येक वस्तु जो प्रकृति के अन्तर्गत है वे सभी एक कम्पन में स्पन्दित होने वाली तरंगे हैं।" इन्हीं तथ्यों का तर्कपूर्ण एवं सुव्यवस्थित विवेचन एवं प्रकाशन इस शोध अध्ययन में किया जायेगा। शोधार्थी का मानना है कि 'मंत्र विद्या' ने अपने आंचल में प्रकृति के गूढ़तम रहस्य को छिपाकर रखा है। यदि इसे आधुनिक विज्ञान की कसौटी में कसकर खरा सिद्ध किया जा सके तो हम पुनः अपनी प्राचीन ऋषित्व गौरव गरिमा को प्रतिस्थापित कर पायेगें।

मंत्र योग का वैज्ञानिक विवेचन

अध्याय 1 – भूमिका

- मंत्र योग और उसकी वैज्ञानिकता का सामयिक महत्व

अध्याय 2 – मंत्र योग के स्रोत

- मंत्रविद्या के आधारभूत ग्रंथ
- मंत्रविद्या के प्रमुख आचार्य
- मंत्रविद्या के सम्प्रत्यय
- वैज्ञानिक दृष्टि ?

अध्याय 3 – मातृका रहस्य

- मातृका स्वरूप
- मातृका वर्ण
- वर्ण विकास
- वैज्ञानिक विवेचन ?

अध्याय 4 – मंत्र रहस्य

- स्वरूप महिमा
- वर्गीकरण
- देवता, ऋषि, छन्द
- मंत्र संस्कार

अध्याय 5 – मंत्र योग का आध्यात्मिक विवेचन

- मंत्रविद्या की आध्यात्मिक दीक्षा
- मंत्र साधक
- जप रहस्य
- आध्यात्मिक तत्वों एवं शक्तियों का विकास

अध्याय 6 -- **मंत्र योग का वैज्ञानिक विवेचन**

- शब्द शक्ति का विज्ञान
- आसन, मुद्रा की वैज्ञानिकता
- चक्रों का विज्ञान
- माला व मंत्र पर वैज्ञानिक दृष्टि

अध्याय 7 - **मंत्र योग साधना का विज्ञान विधान**

- मंत्र साधना के तत्व
- अनुष्ठान अनुबंध
- पुरश्चरण का विज्ञान विधान
- कतिपय विशिष्ट मंत्रों एवं मंत्रात्मक स्रोतों की साधना विधि

अध्याय - 8 **उपसंहार**

- मंत्रों के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व का मूल्यांकन

निष्कर्ष

सुझाव

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थ सूची

1. मंत्र महोदधि, श्रीमन्महिधर विरचित, प्राच्य प्रकाशन वाराणसी।
2. वरिवस्या रहस्यम्, श्री भास्कर राय मखिना, चौखम्भा सुरभारती।
3. रूद्रयामलम् (उत्तर तन्त्रम्), डॉ. सुधाकर मालवीय, चौखम्भा संस्कृत पतिक।
4. रूद्रयामलम् तन्त्रोक्त (श्री देवीरहस्यम), डॉ0 सुधाकर मालवीय, चौखम्भा संस्कृत पतिक।
5. हिन्द अणुभाष्य (ब्रह्मसूत्र भाव्य), श्री वल्लभाचार्य।
6. कर्पूरादिस्तोत्र, महाकाल।
7. कामधेनु (काव्यालङ्कार सूत्र टीका), गोपेन्द्रत्तिपुरहरभूपाल।
8. कामधेनु तन्त्र, गोपेन्द्रत्तिपुरहरभूपाल।
9. गीतार्थ संग्रह (गीता की टीका), अभिनव गुप्त।
10. चिद्गगन चन्द्रिका, कालिदास।
11. तत्व सन्दोह, राज़ानक आनन्दाचार्य।
12. तत्व संग्रह, शांतरक्षित।
13. तन्त्रालोक, आचार्य अभिनव गुप्त।
14. तन्त्राभिधान - भूमिका, आर्थर अवलन।
15. तत्व वैशारदी (योगसूत्रभाष्य टीका), वनस्पति मिश्र।
16. त्रिपुरामहिम्नस्त्रोत टीका, नित्यानन्द।
17. दीपिका (योगिनी हृदय टीका), अमृतानन्द योगी।
18. निरूक्त, यारूकाचार्य।
19. नेत्रतन्त्रोद्योत, क्षेमराज।
20. पञ्चस्तवी, कालिदास।

21. पद प्रकाश (वाक्यपदीय टीका), हेलाराज।

22. परशुराम कल्पसूत्र, परशुराम।

23. पाणिनीय शिक्षा, पाणिनी।

24. प्रकाश (वाक्यपदीय टीका), पुष्पराज।

25. प्रपञ्चसार तन्त्र, शंकराचार्य।

26. मन्त्राभिधान, डॉ0 के.सी. पाण्डेय।

27. महार्थमञ्जरी, महेश्वरानन्द।

28. महाभाष्य, पतञ्जलि।

29. महिम्नस्त्रोत, पुष्पंदन्त।

30. मातृका चक्र विवेक, पुष्पदन्त।

31. मातृका निघण्टु, पुष्पदन्त।

32. मातृका विलास, वंशीधर संङ्क.लित।

33. मिताक्षरा, विज्ञानेश्वर।

34. लोचन (ध्वन्यालोक टीका), अभिनव गुप्त।

35. वरिवस्या रहस्य प्रकाश, भास्करराय।

36. वाक्य पदीय, भर्तृहरि।

37. विवरण (प्रपञ्चसारतंत्र टीका), पद्मपादाचार्य।

38. विवेक (तन्त्रालोक टीका), राजानक जयरथ।

39. विज्ञान भैरव तन्त्र।

40. विज्ञान भैरव विवृत्ति, शिवोपाध्याय।

41. विज्ञान भैरवोद्योत, क्षेमराज।

42. वेदान्तपारिजात (ब्रह्मसूत्रभाष्य), निम्बाकीचार्य।

43. वेददीप (माध्यन्दिन संहिता भाष्य), महीधर।

44. ब्रह्मसूत्र, वादरायण।

45. शक्तिमहिम्नस्त्रोत, क्रोधमहारक-दुर्वासा।

46. शारदातिलक तन्त्र, लक्ष्मण देशिकेन्द्र।

47. शिवदृष्टि, सोमानन्दपाद।

48. शिवसूत्र वार्तिक, भट्टभास्कराचार्य।

49. शिवसूत्र विमर्शिनी, क्षेमराज।

50. श्रीकर भाष्य, श्री पतिपण्डित।

51. सांख्य प्रवचन भाष्य, विज्ञानभिक्षु।

52. सेतुबन्ध (नित्याषोड़ टीका), भास्कर राय।

53. सौभाग्य भास्कर (ललितास टीका), भास्कर राय।

54. सौन्दर्य लहरी, शंकराचार्य।

55. स्वच्छन्द तन्त्र, शंकराचार्य।

56. स्फोट सिद्धि, भरत मिश्र।

57. स्पन्दकारिका, वसुगुप्त।

58. स्पन्दसन्दोह, क्षेमराज।

59. कुल चूडामणि तन्त्र, सं0 गिरीशचन्द्र, संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, 30 कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता।

60. तन्त्र समुच्चय, सं0 गिरीशचन्द्र, संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, 30 कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता।

61. वरिवस्या रहस्यम् - श्री भास्कर राय मखिन्, दि अड्यार लाइब्रेरी ऐण्डं रिसर्च सेन्टर, अड्यार मद्रास, 1968 ई.।

62. विज्ञान भैरव: - व्याख्याकार - वज्रवल्लभ द्विवेदी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1978 ई.।

63. शतरत्न संग्रह - श्री उमापत्ति शिवाचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, 1973 ई.।

64. शिव सूत्रम् - श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद् दतिया (म.प्र.)।

65. शिव स्वरोदय: - श्रीगोपाल पुस्तकालय विश्राम बाजार, मकुरा।

66. तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन - म.म. गोपीनाथ कविराज, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1977.

67. तन्त्र महाविज्ञान - पं0 श्रीरामशर्मा आचार्य, संस्कृति ख्वाजाकुतुब बरेली, 1969.

68. तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त - महामहिम गोपीनाथ कविराज, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1979.

69. मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य - डॉ. शिवशंकर अवस्थी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1966.

70. अभिनव गुप्त, डॉ. के.सी. पाण्डेय।

71. हिन्दू मिस्टिसिज्म भाग-2, सरजान वुडरफ।

72. मिस्टिसिज्म आफ दि तन्त्राज, आर्थर अवलन।

73. इन्ट्रोडक्शन टु तन्त्र-शास्त्र, आर्थर अवलन।

74. इन्ट्रोडक्शन (त्रिपुरारहस्य), पं0 गोपीराज कविराज।

75. लाइट्स आन दि तन्त्राज, एम.पी. पण्डित।

76. महामाया : दि वर्ल्ड ऐज पावर, पावर ऐज कांशसनेस, सर जॉन उडरफ।

77. प्रिंसिपल्स ऑफ तन्त्र, प्रमथनाथ मुखोपाध्याय।

78. शक्ति एण्ड शांक्त, सरजान वुडरफ।

79. दि सरपेन्ट पावर, सरजान वुडरफ।

80. दि शाक्त पीठाज, डी.सी. संरकार, एम.ए., पी.एच-डी.

81. दि पावर ऑफ मन्त्रो, दि मिस्ट्री ऑफ इनिसिएशन, पं. राजमनी त्रिगुनाथ।

82. अण्डरस्टेंडिंग मन्त्राज, हारवे पी. आल्पर (संपादक)